वर्ष–2009 माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल मु.उ.पु. 24 पृष्ठ

कार्यालयीन उपयोग के लिए

परीक्षा के नाम की सील: हायर ... परीक्षा

निम्न रिक्तियों की सही प्रविष्टि परीक्षार्थी द्वारा की जाए।

1. विषय कोड | 0 | 0 | 1 | परीक्षा का विषय हिन्दी

2. परीक्षा का माध्यम हिन्दी परीक्षा की दिनांक 12/3/2009

3. परीक्षार्थी प्रश्न पत्र का पूर्ण कोड नम्बर (सेट A, B, C, या D) अनिवार्यतः भरें

कोड	सेट
U - 2001	D

स्टीकर तीर के निशान से मिलाकर लगायें

[redacted]

केन्द्र क्रमांक की सील

C.NO.- 221017

पर्यवेक्षक/केन्द्राध्यक्ष का प्रमाणीकरण

प्रमाणित किया जाता है कि परीक्षार्थी द्वारा निम्नानुसार पूरक उत्तरपुस्तिका ली गई है :–

क :– संख्या शब्दों में दो अंकों में 2

ख :– परीक्षार्थी की बैठक व्यवस्था कक्ष क्रमांक 7 में है।

ग :– उत्तर पुस्तिका पर प्रश्न–पत्र का कोड नम्बर एवं सेट सही लिखा है।

4. परीक्षार्थी का अनुक्रमांक (अंग्रेजी अंकों में)

2	9	2	2	1	8	2	7	4

5. नीचे दिये प्रत्येक कालम में ऊपर दिये गये अनुक्रमांक के अंकों को उसी क्रम में शब्दों में लिखा जाए :–

दो	नौ	दो	दो	एक	आठ	दो	[redacted]	

[redacted]

B हस्ताक्षर (पर्यवेक्षक) ——

S नाम सुरेन्द्र उपाध्याय पद ——

E पता/संस्था श्री माध्य. विद्यालय ——

परीक्षार्थी द्वारा ली गई सभी पूरक उत्तर पुस्तिकाएँ, मुख्य उत्तर पुस्तिका के साथ संलग्न हैं।

M

P हस्ताक्षर केन्द्राध्यक्ष

1	3
2	
3	
4	
5	
6	
7	
8	
9	
10	
कुल प्राप्त	

परीक्षार्थी, परीक्षक से अपेक्षा है कि वे पृष्ठ भाग पर दिये गये निर्देशों का यथेष्ट पालन सुनिश्चित करेंगे।

प्रमाणित किया जाता है कि उपरोक्तानुसार संलग्न पूरक उत्तर पुस्तिका चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही उत्तरपुस्तिका का मूल्यांकन किया गया है। मैंने सभी प्रश्नों के उत्तरों का गहन मूल्यांकन किया है। उत्तर पुस्तिका के अन्दर के अंक एवं कव्हर पृष्ठ पर दर्शाये अंक एक समान है एवं योग पूर्णतः सही है।

हस्ताक्षर (परीक्षक) हस्ताक्षर (उपमुख्य परीक्षक) हस्ताक्षर (मुख्य परीक्षक)

परीक्षक क्रमांक 45 दिनांक........ दिनांक........

परीक्षार्थी के लिए निर्देश

1. परीक्षार्थी को अपना अनुक्रमांक/विषय/माध्यम/दिनांक एवं प्रश्न–पत्र का कोड (समूह) मुख पृष्ठ पर अंकित करना अनिवार्य है। अन्यत्र कहीं भी नहीं लिखा जाएगा।
2. अनुक्रमांक नीचे दिये गए उदाहरण अनुसार लिखा जाए :–

1	8	2	4	3	9	5	6	8
एक	आठ	दो	चार	तीन	नौ	पाँच	छः	आठ

3. उत्तर पुस्तिका के दोनों ओर पृष्ठों में लिखें। बीच में रिक्त स्थान न छोड़ें। भूल से छूटा/रिक्त स्थान तथा शेष खाली पृष्ठों को क्रास किया जाए।
4. परीक्षार्थी प्रश्न पत्र हल करते समय ही, कव्हर पृष्ठ पर दी गई तालिका में प्रश्न क्रमांक के सम्मुख वाले कालम में उत्तरपुस्तिका का वह पृष्ठ क्रमांक अनिवार्य रूप से अंकित करें जिस पर प्रश्न का उत्तर लिखा गया है। यदि पूरक उत्तरपुस्तिका का उपयोग किया गया हो, तो उस पर 25 से प्रारंभ करते हुए पृष्ठ क्रमांक परीक्षार्थी द्वारा स्वयं डाले जाएँ।

परीक्षक के लिए निर्देश

1. केवल उन्हीं उत्तरपुस्तिकाओं का मूल्यांकन करें जिन पर होलो क्राफ्ट स्टीकर चस्पा है।
2. उत्तरपुस्तिका का मूल्यांकन होलो क्राफ्ट स्टीकर को चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही किया जाये।
3. बिना होलो क्राफ्ट स्टीकर वाली तथा फटे हुए होलो क्राफ्ट स्टीकर वाली सभी उत्तरपुस्तिकाऐं मूल्यांकन हेतु परीक्षा नियंत्रक, माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल को व्यक्तिशः रूप से भेजी जांये।

मूल्यांकन केन्द्र के लिए निर्देश

1. **O.M.R. SHEET** पर प्राप्तांक की प्रविष्टि करने हेतु केवल वही उत्तरपुस्तिकाएँ प्राप्त करें, जिनका मूल्यांकन होलो क्राफ्ट स्टीकर को चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही किया गया है। यदि होलो क्राफ्ट स्टीकर फटा हुआ पाया जाता है तो ऐसी उत्तरपुस्तिकाऐं मूल्यांकन केन्द्र अधिकारी को पृथक से सौंपी जाएँ। ऐसे प्रकरणों के प्राप्तांकों की प्रविष्टि **O.M.R. SHEET** में नहीं की जाए। मूल्यांकन केन्द्र अधिकारी ऐसी उत्तरपुस्तिकाऐं पुनः मूल्यांकन के लिये परीक्षा नियंत्रक, माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल को व्यक्तिशः रूप से सौपेंगे।
2. उत्तरपुस्तिका के मुख्य पृष्ठ में अंकों एवं शब्दों में अंकित प्राप्तांकों को मिला कर **O.M.R. SHEET** में अंकों की सटीक प्रविष्टि करें।
3. **O.M.R. SHEET** पर प्रमाणीकरण कर हस्ताक्षर करें।

BSEMP

Answer - 1

(i) गजानन माधव मुक्तिबोध

(ii) आत्मकथा

(iii) शहतूत

(iv) जायसी

(v) मनोहर की कुरूपता पर

Answer - 2

(i) छायावाद

(ii) बालकृष्ण भट्ट

(iii) व्यंग्य

(iv) नवगीत

(v) जो मंजिल के बिल्कुल समीप है।

पृष्ठ के अंकों का योग

Answer - 3

(i) सत्य

(ii) असत्य

(iii) सत्य

(iv) असत्य

(v) असत्य

Answer - 4

(i) घ → सूरदास

(ii) ग → नयी कविता

(iii) ङ → वाक्य

(iv) ख → फीलखाना

(v) क → भय

E
M
P

पृष्ठ के अंकों का योग

(5) यो + पृ अंक = कुल अंक

BSEMP

Answer - 5

(i) राजरानी देवी

(ii) आकाश

(iii) काली काला

(iv) वीरों का

(v) जुगुप्सा

Question - 6

Ans- लेखक उदयशंकर भट्ट महानगरों की आवास समस्या पर प्रकाश डालते हुये बताया है कि महानगरों में मध्यमवर्गीय परिवारों को आवास की समस्या का सामना करना पड़ता है।

नये मेहमान एकांकी में, एकांकीकार ने महानगरों की आवास समस्या पर प्रकाश डाला है चूँकि महानगरों में मध्यमवर्गीय परिवार छोटे तथा तंग गलियों में स्थित मकानों में रहते हैं जिससे न तो शुद्ध वायु साँस लेने के लिये मिलती

है। और न ही पीने के लिये साफ पानी। गर्मी के दिनों में यह समस्या और भी बढ़ जाती है जिससे मेहमानो के आने पर यह समस्या विकराल रूप धारण कर लेती है। तथा दिल्ली जैसे महानगरो में मकान मिलना भी मुश्किल होता है।

इस प्रकार नये मेहमान एकांकी के आधार पर लेखक ने महानगरों की आवास समस्या पर प्रकाश तो डाला है किंतु इस समस्या का समाधान नहीं बताया है।

इस एकांकी में रेवती तथा विश्वनाथ जैसे मध्यमवर्गीय लोगों की आवास समस्या को उजागर किया है जहाँ गर्मियों में खुली हवा में सोने का स्थान नहीं रहता है।

BSEMP

7

Question -7

महाकाव्य तथा खण्डकाव्य में अंतर इसप्रकार है —

	महाकाव्य	खंडकाव्य
1	महाकाव्य में मानव जीवन के समस्त पहलुओं का अंकन किया जाता है।	खंडकाव्य में मानव जीवन के एक पहलू का अंकन किया जाता है।
2	महाकाव्य विस्तृत तथा दीर्घ होता है।	खंडकाव्य संक्षिप्त होता है।

महाकाव्य	रचनाकार
रामचरित मानस	तुलसीदास

खंडकाव्य	रचनाकार
पथिक	रामनरेश त्रिपाठी

B
S
E
M
P

अंक

कुल अंक

Question – 9

Ans – मैथिलीशरण गुप्त जी ने 'महत्ता' नामक कविता मे भारतवर्ष की महत्ता का प्रतिपादन करते हुये कहा है कि कि जो लोग भारत को असभ्य बता रहे हैं वे या तो भारत की संस्कृति से अपरिचित हैं या पक्षपात की भावना से ग्रसित हैं क्यो कि जैसे -2 भारत की प्राचीनता की खोज होती जायेगी वैसे -2 भारत की संस्कृति के प्रमाण मिलते जायेंगे।

भारत मे चीन, यूरोप, जापान इत्यादि देशो के विद्यार्थी भारत मे शिक्षा ग्रहण करने आते हैं हमने सिकंदर जैसे लोगो को सभ्य कर दिया तथा यूरोप जैसे देशो को सभ्यता का पाठ पढाया सर्वप्रथम यहीं वेदो का जन्म हुआ।

इसप्रकार भारत की महत्ता का बखान किया गया है।

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

BSEMP

Question - 10

निबंध - 'नि + बंध' मिलकर बना हुआ है जिसका अर्थ है 'भली प्रकार से बँधी हुयी रचना'।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार निबंध की परिभाषा - "यदि गद्य लेखकों के लेखन की कसौटी है तो निबंध गद्य की कसौटी है।"

हिन्दी निबंध साहित्य को चार वर्गों में विभाजित किया गया है जो इसप्रकार है -

भारतेन्दु युग	1850 ई. से 1900 ई. तक
द्विवेदी युग	1900 ई. से 1920 ई. तक
शुक्ल युग	1920 ई. से 1940 ई. तक
शुक्लोत्तर युग	1940 ई. से अबतक

Question - 11

Ans - भारतवर्ष सेवा तथा संस्कृति का देश है यहाँ आज भी पशु - पक्षियो को पूजा जाता है हम सुबह उठते ही पक्षियों को दाना डालना नहीं भूलते । तथा खाना खाने से पहले एक रोटी गाय के लिये निकालते हैं भारत एक मात्र ऐसा देश है जहाँ पत्थर भी पूजे जाते हैं तथा गाय में हम भगवान की छवि को देखते हैं भगवान कृष्ण भी गायों की सेवा करते थे जिससे वे गोपाल कहलाने लगे ।

इसप्रकार महादेवी वर्मा बछड़े (बछिया) लालमणि के बारे में सोचती हैं तथा ग्वाल पशुओं को बहुत अच्छी तरीके से पालते हैं।

इसी सोच में डूबी हुये महादेवी वर्मा गर्म निश्वाँस छोड़ते हुये कहती है "आह मेरा गोपालक देश।" अर्थात गायों को पालने वाला देश।

Answer -12

साहित्य में काव्य के प्रमुख गुण तीन माने गये हैं। जो इसप्रकार है-

1 माधुर्य गुण
2 ओज गुण
3 प्रसाद गुण

ओज गुण – वह गुण जिसमें कठिन वर्णों का प्रयोग किया जाता है तथा लंबे - 2 सामासिक पद होते हैं। ओजगुण कहलाता है।

इस गुण वीर रस, रौद्र रस आदि रसों का प्रयोग किया जाता है।

उदाहरण – अमर शब्द, उद्दंड शब्द,
उन्मुक्त शब्द, यह मेरी बोली,
यह सुधार समझौते वाली,
मुझको भाँति नहीं ठिठोली !!

BSEMP

Answer - 13

अ -

(i) अंधेर मचाना - मनमानी करना

वाक्य प्रयोग - गोपाल जब राकेश से कहता है कि तुम इस राज के बारे मे किसी से मत कहना तब राकेश कहता है अंधेर मचाते हो।

(ii) अपनी करनी पार उतरनी - स्वयं द्वारा किये गये कार्य से सफलता प्राप्त होती है।

वाक्य प्रयोग - जब सेठ जी ने नौकर से कहा कि तू सोना खरीद ला लेकिन वह नौकर कुछ और ले आया तब सेठ जी बोल पड़े अपनी करनी पार उतरनी।

(ब) - भावविस्तार - जवारो जैसे पीताभ के पौधे सृजन का संदेश देते है क्योंकि सृजन का प्रकाश ही जीवन मे उन्नति प्रदान करता है जो व्यक्ति इस प्रकाश से

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

प्रकाशित होता है वह यदि दूसरो को छू ले तो वह भी प्रकाशित हो जाता है।

सृजन का प्रकाश केवल उन व्यक्तियो के पास होता है जो शील, श्रम, मेहनत ईमानदारी आदि गुणों से सुशोभित होते हैं।

इसप्रकार "जवारों जैसे पीताभ गेहूँ के पौधे मनुष्य को सृजन का संदेश देते हैं।"

BSEMP

Answer - 14

मैथिल शरण गुप्त - इन्होंने राष्ट्रीयता पर आधारित काव्यों पर कवितायें लिखी।

(क) दो रचनाये -

1. साकेत
2. विकटभर

(ख) भावपक्ष - मैथिली शरण गुप्त जी ने अपनी कविताओं में रस, काव्य गुण आदि का प्रयोग किया है -

रस संयोजना - गुप्त जी ने अपने काव्यो में करुण, वीर, श्रृंगार आदि रसो का प्रयोग किया है।

पृष्ठ के अंको का योग

गुप्त जी ने तत्सम तद्भव आदि का प्रयोग किया है।

गाँधीवादी दृष्टिकोण की झलक – गुप्त जी के काव्य का मनन करने पर उनके काव्यो में गाँधीवादी दृष्टिकोण की भावना का समावेश हुआ है।

नारी के प्रति सम्मान – इन्होंने नारी की करुण दशा को सुधार करने के लिये प्रयास किये।
"अबला जीवन हाय, तुम्हारी यही कहानी।
आँचल में है दूध, आँखो में है पानी॥"

कलापक्ष – गुप्त जी के कलापक्ष के अंतर्गत निम्न बाते हैं–

1- अलंकारिक शैली – गुप्त जी के काव्यों में यमक, उपमा, उत्प्रेक्षा श्लेष आदि अलंकारों का प्रयोग किया गया है।
2- खड़ी बोली का प्रयोग – गुप्त जी ने

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

अपने काव्यों में परिनिष्ठित खड़ी बोली का प्रयोग किया है।
इसके अतिरिक्त इन्होंने अपने काव्यों में शब्द शक्ति, मानवीकरण आदि का प्रयोग किया है।

साहित्य में स्थान — मैथिल शरण गुप्त ने अपने काव्यों में भारत वर्ष की एकता, महत्ता आदि का जो समावेश किया है वह अक्षुण्ण है आपने हिन्दी साहित्य को नई दिशा प्रदान की। आप 'राष्ट्रकवि' के रूप में सदैव याद किये जायेंगे।

B S E M P

Answer – 15

डॉ. रघुवीर सिंह

"डॉ. रघुवीर सिंह ने ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि पर लेखन कार्य किया है आपका गद्य साहित्य में बोझिल नहीं है।"

(क) दो रचनायें –

1 सप्त द्वीप

2 पूर्व आधुनिक राजस्थान

(ख) – भाषा शैली

भाषा – डॉ रघुवीर सिंह अपने गद्य में परिमार्जित खड़ी बोली का प्रयोग किया है यदा कदा संस्कृत मिश्र तथा उर्दू फारसी आदि शब्दों का प्रयोग किया है। इन्होंने अपने गद्यकाव्य में प्राचीन – ऐतिहासिक कहानियों का प्रयोग किया है इन्होंने तत्सम, तद्भव, मुहावरे लोकोक्तियों का प्रयोग किया है।

BSEMP

यदा-कदा अलंकार उपमा रूपक उत्प्रेक्षा जैसे अलंकारों का प्रयोग किया है तथा इनकी भाषा व्याकरण सम्मत, सरल सुबोध तथा अलंकारिक है जिससे इनकी भाषा चमत्कृत बन पड़ी है।

शैली — इन्होंने अपने गद्य काव्य में निम्न शैलियों का प्रयोग किया है।

1 व्यास शैली — इन्होंने अपने काव्य में व्यास शैली का प्रयोग किया है।

2 सन्लाप शैली — इन्होंने अपने गद्यकाव्य में सन्लाप शैली का प्रयोग किया है।

3 समास शैली — समास शैली के प्रयोग से इनकी भाषा सरल तथा सुबोध है।

4 निगमन शैली — निगमन शैली के प्रयोग से भाषा में प्रवाहमयता आ गयी है।

इसप्रकार डॉ रघुवीर सिंह ने इन शैलियों के प्रयोग से गद्यकाव्य को चमत्कृत बना लिया है।

B S E M P

पृष्ठ के अंकों का योग

Answer - 16

संकेत - भीरुता — — — — — — रखता।

संदर्भ - प्रस्तुत गद्य अवतरण पाठ्य पुस्तक के भय नामक निबंध से उद्धृत किया गया है जिसके लेखक आचार्य रामचन्द्र शुक्ल हैं।

प्रसंग - इसमें शुक्ल जी ने कायर लोगों के बारे में बताते हुये कहा है कि कायर लोगों को अपनी शक्ति पर विश्वास नहीं होता है।

व्याख्या - शुक्ल जी कहते हैं कि जो लोग भीरु अर्थात कायर होते हैं उन्हें हमेशा ही कष्टों से डर लगता है तथा उनमें कोई भी दुख सहने की क्षमता नहीं होती नाही उन्हें अपनी शक्ति पर भरोसा होता है। जो व्यक्ति अपने शत्रु के सामने से भाग खड़े होते हैं उनसे यही तात्पर्य निकलता है कि

B S E M P

वे शारीरिक कष्ट सहन नहीं कर सकते तथा उस शक्ति के द्वारा अर्थात् शत्रु के द्वारा उस पीड़ा से अपनी रक्षा करने का विश्वास नहीं रखते हैं।

अर्थात् जिस व्यक्ति साहस, जोश सहनशीलता आदि गुणों की कमी होती है वे कभी भी शत्रु द्वारा अपनी रक्षा नहीं कर पाते।

विशेषता – 1 खड़ी बोली का प्रयोग।

2 परिमार्जित लेखन शैली।

3. कायर व्यक्ति में अपनी रक्षा न कर पाने का विश्वास।

4. भीरुता के बारे में बताया गया है जो एक मनोविकार है।

BSEMP

Question - 12

Ans :

संकेत - बानी - - - - - - नई-नई।

संदर्भ — प्रस्तुत पद्यखंड पाठ्यपुस्तक के 'सरस्वती वंदना' से उद्धृत की गयी है। जिसके कवि रीतिकालीन कवि 'केशवदास' हैं।

प्रसंग — सरस्वती जी की उदारता का वर्णन है जिसमें उनकी उदारता का वर्णन कोई नहीं कर सकता।

व्याख्या — कवि कहता है कि बानी जगरानी अर्थात सरस्वती की उदारता का वर्णन कोई नहीं कर सकता है वे अत्यधिक उदार है ऐसा उदार कोई नहीं है जो उनकी उदारता का वर्णन कर सके।
उनकी उदारता का वर्णन, देव, ऋषि प्रसिद्ध तपस्वी आदि ने किया किंतु वह सब हार गये और

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

BSEMP

उनकी उदारता का वर्णन कोई न कर सका।

भूत, भविष्य, वर्तमान आदि ने उनकी उदारता का वर्णन किया किंतु कोई भी न कर सका।

केशवदास जी कहते हैं उनकी उदारता का वर्णन उनके पति चार मुख वाले (ब्रह्मा जी) पुत्र पाँच मुख वाले (शंकर जी) तथा नाती (छः मुख वाले) कार्तिकेय कोई न कर सका।

विशेष

1 - ~~सरस्वती~~ सरस्वती जी की उदारता का वर्णन।

2 - सरस्वती जी को बानी ज्ञानी कहा गया है।

3 - ब्रह्मा जी (चार मुख) पति
शंकर जी (पाँच मुख) पुत्र
कार्तिकेय जी (छः मुख) नाती
कोई भी सरस्वती जी की उदारता का वर्णन न कर सका।

4 - भूत, भविष्य, वर्तमान भी सरस्वती जी की उदारता का बखान नहीं कर सके।

पृष्ठ के अंकों का योग

मध्यप्रदेश

BSEMP

Answer - 18

सेवा में,

पुलिस अधीक्षक
जिला - छतरपुर
मध्य प्रदेश

विषय - मुहल्ले में चोरी की घटनाओ में वृद्धि होने के कारण पुलिस गश्त बढाने हेतु पत्र

मान्यवर,

सविनय नम्र निवेदन है कि हमारी कॉलोनी गोपालगंज में दिन प्रतिदिन चोरी की घटनाये बढती जा रही है जिससे रात को कोई भी ठीक से सो नहीं पाता। पिछलीरात, एक घर मे चोर घुस गये जिससे मुहल्लेवासियो की सतर्कता ने चोरी नही कर पाये।

अतः आपसे नम्र निवेदन है कि रात को पुलिस गश्त में वृद्धि कराने का कष्ट करें जिससे मुहल्लेवासी शांति से जीवन यापन कर सके।

दिनांक - 12/3/2009

भवदीय
गोपालगंज के निवासी
(सतना)

धन्यवाद

Answer - 8

बहन को चिनगारी तथा भाई को ज्वाला बताकर कवि गोपालसिंह नेपाली राष्ट्र को स्वतंत्र कराने के लिये कहा है राष्ट्र अर्थात भारतमाता को गुलामी की बेड़ियों से छुड़ाने के लिये बहन को चिनगारी बनना पड़ेगा तभी देश में सुखशांति ला सकते हैं तथा भाई को ~~ज्वाला~~ ज्वाला बताया गया है क्यों कि राष्ट्र तभी सुख शांति प्राप्त कर सकता है जब बहन तथा भाई मिलकर देश में आजादी की आवाज फूंक देते हैं जिससे भारत माता को गुलामी की बेड़ियों से मुक्त करा सकते हैं।

BSEMP

Answer — 19

संकेत — संस्कार — — — — — — कहा जायेगा।

(i) Ans.

उचित शीर्षक — शिक्षा

सारांश — प्रस्तुत गद्यांश में शिक्षा का महत्व बताया गया है कि यदि व्यक्ति अच्छी शिक्षा ग्रहण करता है तो वह संस्कारित बन जाता है और यदि कोई शिक्षा के महत्व नहीं समझता है तो वह सामाजिक जीवन में उन्नति के शिखर पर नहीं पहुँच सकता है।
शिक्षा प्रणालियों के महत्व अंतर बताया गया है।

(iii) अंग्रेजी शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य शासन को व्यवस्थित रूप में चलाना है।

BSEMP

25 हार्ड -

पूरक उ.पु. 4 पृष्ठ

हॉयर सेकेण्डरी सर्टी० परीक्षा

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

1. केन्द्र की सील
2. पर्यवेक्षक के हस्ताक्षर व दिनांक 12/3/09
3. केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर की सील
4. केन्द्र क्रमांक
6. परीक्षा का नाम R.NO.- 221017
7. विषय हिन्दी 8. माध्यम हिन्दी
8. दिनांक 12/3/2009

पृष्ठ

परीक्षक के लिये

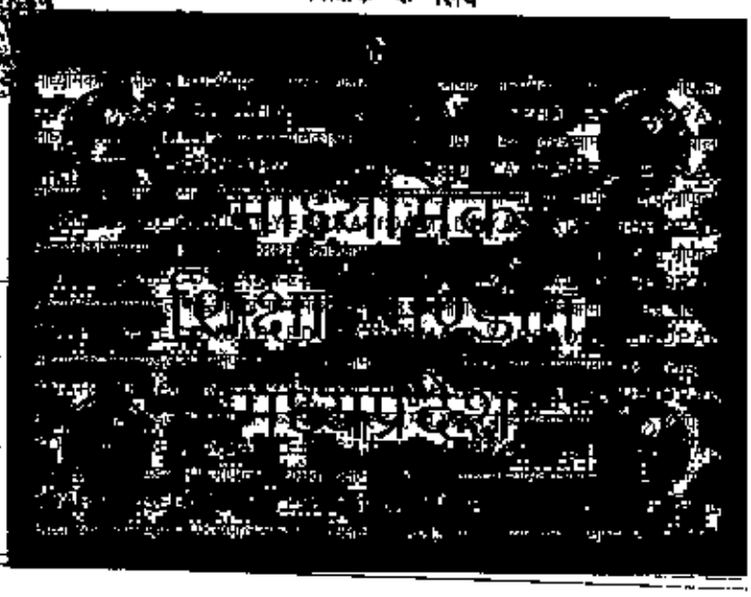

B S E M P

पृष्ठ के अंकों का योग

Answer - 20

राष्ट्रीय एकता -

रूपरेखा :-

(i) प्रस्तावना
(ii) राष्ट्रीय एकता का तात्पर्य
(iii) राष्ट्रीय एकता की आवश्यकता
(iv) राष्ट्रीय एकता में बाधक तत्व
(a) साम्प्रदायिकता
(b) जातिवाद
(c) भाषावाद
(d) क्षेत्रीयता की भावना
(v) राष्ट्रीय एकता का महत्व
(vi) राष्ट्रीय एकता को बनाये रखने के उपाय
(vii) उपसंहार

(2)

= [✓]

पृष्ठ कुल अंक

281005

प्रस्तावना – राष्ट्रीय एकता किसी देश की शक्ति होती है।

"मजहब नहीं सिखाता, आपस में बैर रखना।
हिन्दी है हम वतन है, हिन्दोस्ता हमारा ॥"

भारत जैसे देश में जहाँ विभिन्न जाति समुदाय, संस्कृति, भाषा विचारो के लोग रहते है इसके लिये राष्ट्रीय एकता का महत्व और भी बढ़ जाता है जहाँ हमे राष्ट्रीय एकता को बनाये रखने का भरसक प्रयास करना चाहिए अन्यथा वह दिन दूर नही जब भारत मे एकता का महत्व न समझा जाये अतः राष्ट्रीय एकता का महत्व भारत जैसे देश मे सर्वाधिक बढ़ जाता है राष्ट्रीय एकता राष्ट्र के विभिन्न राज्यो गॉवो को एक सूत्र मे पिरोते हुये भारत की राष्ट्रीय एकता को कायम रखे जिससे हमारा देश अन्य देशो से महान बने।

BSEMP

3

पूर्व पृष्ठ — पृष्ठ 3 के अंक — कुल अंक

राष्ट्रीय एकता का तात्पर्य — राष्ट्रीय एकता से तात्पर्य यह है कि भारत मे अनेक जाति, सम्प्रदाय भाषा - भाषी, खान - पान मे भिन्नता रखने वाले लोग रहते है जिससे यहाँ भारत की एकता का महत्व और भी बढ़ जाता है राष्ट्रीय एकता समस्त देशवासियो को एक सूत्र मे पिरोये रहती है जिससे भारत मे राष्ट्रीय एकता बनी रहती है तथा भारत में संस्कृति की भिन्नता भी है जिससे राष्ट्रीय एकता का महत्व और भी बढ़ जाता है।

राष्ट्र मे सभी एक दूसरे को भाई - बहिन मानते है जिससे राष्ट्रीय एकता मजबूत बनती है।

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

4 + [ ] = [ ]

योग पूर्व पृष्ठ   पृष्ठ 4 के अंक   कुल अंक

BSEMP

राष्ट्रीय एकता की आवश्यकता – यदि देश मे राष्ट्रीय एकता न हो तो हमारा देश छिन्न भिन्न हो जाये आतंकवाद हमारे देश को नष्ट कर दे।

अन्य देश हमारे देश पर राज्य करे इसलिये हमें राष्ट्रीय एकता की आवश्यकता पड़ती है

देश की उन्नति सुख समृद्धि के लिये राष्ट्रीय एकता की आवश्यकता होती है।

यदि देश मे किसी राज्य पर (कश्मीर) हमला हुआ है तो दिल्ली मे स्थित केन्द्र के स्थित सभी राज्यों के लोग मिलकर आतंकवाद का सामना करते है जिससे देश की एकता का पता चलता है।

देश मे समय – २ दूसरे देश हमला कर देते है जिससे असंख्य लोगो की मृत्यू हो जाती है जिससे हर राज्य के लोग एकजुट होकर उस राज्य की सहायता को तत्पर हो जाते हैं जिससे देश की राष्ट्रीय एकता का महत्व पता चलता है।

BSEMP

(b) 281

जातिवाद – आज भी हमारे देश मे पाकिस्तान से आये मुस्लिम देश मे अपने - अपने दल बनाकर जाति के नाम पर झगड़ा करते है जिससे इस झगड़े मे अनेक हिंदु मुस्लिम मारे जाते है। जिससे देश की राष्ट्रीय एकता खतरे मे पड़ जाती है।

(c) भाषावाद – देश मे हिंदी को राष्ट्र भाषा माना गया है किंतु कुछ राज्यो के लोग अंग्रेजी को राष्ट्रभाषा बनाने के इच्छुक है जिससे राष्ट्रीय एकता खतरे मे पड़ जाती है।

(d) क्षेत्रीयता की भावना – राष्ट्रीय एकता मे प्रमुख बाधक तत्व राष्ट्रीय एकता में है क्षेत्रीयता की भावना इस भावना मे एक क्षेत्र के लोगो का दूसरे क्षेत्र मे जाने पर हिंसा होती है उन्हे मार डाला जाता है।

इसप्रकार ये सभी तत्व राष्ट्रीय एकता मे बाधक है।

वर्ष–2009

पूरक उ.पु. 4 पृष्ठ

हेरा फेरी सर्टी० परीक्षा

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

परीक्षक के लिये

[redacted]

1. केन्द्र की सील
2. पर्यवेक्षक के हस्ताक्षर व दिनांक
3. केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर की सील
4. केन्द्र क्रमांक C.NO.- 221017
6. परीक्षा का नाम
7. विषय हिन्दी 8. माध्यम हिन्दी
8. दिनांक 12/8/2009

पृष्ठ

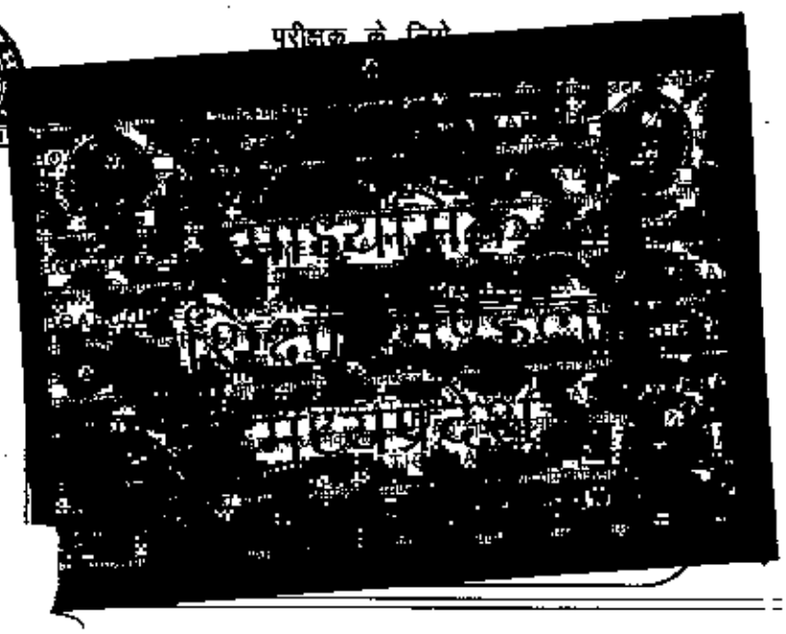

BSEMP

(iv) राष्ट्रीय एकता में बाधकतत्त्व — हमारे देश की राष्ट्रीय एकता को नष्ट करने के लिये समय-2 निम्न तत्त्व बाधा उत्पन्न करने लगते हैं।

(i) साम्प्रदायिकता — हमारे देश में कभी-2 सम्प्रदाय के नाम पर दंगे झगड़े, फसाद होते रहते हैं ये झगड़े, हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई आदि के मध्य चलते रहते हैं जिससे देश की राष्ट्रीय एकता में बाधा उत्पन्न होती है। देश की राष्ट्रीय एकता खतरे में पड़ जाती है।

पृष्ठ के अंकों का योग

(3) योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 3 के अंक = कुल अंक

(v) राष्ट्रीय एकता का महत्व – राष्ट्रीय एकता के महत्व को समझने के लिये सर्वप्रथम हमें अपनी देश में स्वयं से शांति की भावना बनाये रखना आवश्यक है –

कुछ पंक्तियाँ इसप्रकार है–

"जिसको न निज गौरव तथा निज देश का अभिमान है वह नर नहीं निरा है, और मृतक समान है।"

इसप्रकार हमें राष्ट्रीय एकता के महत्व को समझना चाहिए।

(vi) राष्ट्रीय एकता को बनाये रखने के उपाय – राष्ट्रीय एकता को बनाये रखने के लिये निम्न बातें आवश्यक है –

1 देश में क्षेत्रीयता की भावना को रोकना होगा।

2 देश में साम्प्रदायिक भावना को रोकना होगा।

3 आतंकवाद का एकजुट होकर सामना करना होगा।

4 देश में भाषावाद को रोकना होगा।

अंकों का योग

5. देश में जातिवाद को जड़ से उखाड़ना होगा।

ये सभी वे उपाय हैं जिनसे राष्ट्रीय एकता को बचाया जा सकता है।

उपसंहार — राष्ट्रीय एकता से देश में मजबूती आती है देश समृद्ध तथा सुखी बनता है। राष्ट्रीय एकता द्वारा जन-2 के होंठो पर मुस्कान फैल जाती है। राष्ट्रीय एकता देश की एक शिला के समान है जो हमें याद दिलाती है

"सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ता हमारा"

इसीप्रकार पुनः
"मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना।।
हिंदी हैं हम वतन हैं हिन्दोस्तां हमारा।।"

इस प्रकार राष्ट्रीय एकता देश की मजबूत आधारशिला है।

B S E M P